

मानवता को सद्गर्ग दिखते भर्तृहरि के उपदेश

डॉ० अरुण कुमार त्रिपाठी

(तिघरा, नगहरा, बस्ती)

48/18 HIG योजना-2 झूँसी

इलाहाबाद- 211019



ABSTRACT

Article Info

Volume 3 Issue 5

Page Number : 111-114

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 15 Oct 2020

Published : 26 Oct 2020

सारांश- भर्तृहरि के जीवन में घटने वाली घटनाओं का प्रभाव इतना अधिक पडा कि इन्होंने जैसा जीवन व्यतीत किया उसी तरह का उनके लेखन पर भी प्रभाव पड़ता गया। यही कारण है कि जब वे अपने युवावस्था को राजा के रूप में व्यतीत कर रहे थे, तब उन्होंने शृंगार शतक लिखा जो कि उनके जीवन में घटित हो रहे घटनाएं तथा उनकी पटरानी पिंगला के प्रेम को दर्शाता है। वहीं जब वे राजा के रूप में न्याय की कुर्सी पर बैठते थे, तब उनके न्याय का पता उनके ग्रंथ नीतिशतक से लगाया जा सकता है। तथा वहीं जब उनकी प्रिय रानी पिंगला के द्वारा उनको धोखा दिया जाता है तथा उनके मन में बैराग्य प्रस्फुटित होता है, तो इसका लक्षण उनके ग्रंथ वैराग्यशतक में परिलक्षित होता है। इसलिए आज मानवता के लिए भर्तृहरि का जीवन दर्शन तथा उनकी रचनाएं अनुकरणीय हैं। गृहस्थ के लिए इनका शृंगारशतक, राजा तथा न्यायाधीश के लिए नीतिशतक तथा सन्यासी के लिए वैराग्यशतक ग्रंथ उपयोगी है। लोगों को इन ग्रंथों में दिये गये उपदेशों का अनुकरण करना चाहिए। प्रस्तुत शोधपत्र में भर्तृहरि के उपदेशों की झांकी प्रस्तुत की गई है।

शब्द- भर्तृहरि, वैराग्यशतक, नीतिशतक, शृंगारशतक, जीवन, दर्शन, उपदेश, मानवता, सद्गर्ग।

भर्तृहरि की प्रसिद्ध रचना वाक्यपदीय, शृंगार शतक, नीति शतक तथा वैराग्य शतक आदि हैं। भट्टिकाव्य भी भर्तृहरि की रचना है। चीनी यात्री इत्सिंग ने अपने यात्रा वृत्तान्त में लिखा है कि प्रसिद्ध कवि एवं दार्शनिक भर्तृहरि कृत भर्तृहरिशास्त्र, पातञ्जल भाष्य की टीका तथा वाक्यपदीय नालन्दा में पढ़ाया जाता था। गोरखसिद्धान्त संग्रह में भर्तृहरि और शेषावतार नागेश का संवाद वर्णित है। उल्लेख है कि योगिराज भर्तृहरि, जो विचारनाथ के नाम से प्रसिद्ध हैं, व्याकरण शास्त्र पर एक लाख कारिकाओं (सूत्रों) की रचना की। इस प्रकार से भर्तृहरि की अनेक कृति हैं जिनमें से कुछ उपलब्ध भी हैं। उनके अपने ग्रन्थों में भर्तृहरि का सम्पूर्ण जीवन दर्शन प्राप्त होता है। राज्य के समय शृंगार शतक का, न्याय के समय नीतिशतक का तथा वैराग्य के समय वैराग्य शतक के श्लोक उनके पूरे जीवन की झांकी प्रस्तुत करते हैं। कल्याण पथ का चित्रण करते हुए उन्होंने नीतिशतक में लिखा-

प्राणघातान्निवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवाक्यं।
काले शतएया प्रदानं युवतिजनकथा मूकभावः परेषाम्॥
तृष्णा स्रोतोविभंगो गुरुषु च विनयः सर्वभूतानुकम्पा
सामान्यः सर्वशास्त्रोपवनुपहतविधिः श्रेयषामेष पंथा ॥¹

अर्थात् -जीवन हिंसा से निवृत्त रहना, परधन-हरण से दूर रहना, तृष्णा के प्रवाह को रोक लेना, विनम्र रहना प्राणीमात्र के प्रति दया करना, शास्त्रचिन्तन करना और नित्य नैमित्तिक श्रेयस्कर कर्म का आचरण करना ही वास्तविक कल्याण का रास्ता है। उन्होंने पिंगला के द्वारा किये गये व्यवहार तथा अपने प्रेम को नश्वर कहा-

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक्तां च तं च मदनं च इमां च मां च॥²

अर्थात् मैंने उसे (पिंगला को) अपने प्राणों से भी प्रिय समझा, पर वह मुझ से अनासक्त होकर दूसरे के प्रेमपाश में आबद्ध हो गयी। विचित्र तो यह है कि वह दूसरा किसी और से आसक्त था। पिंगला को धिक्कार है। मुझे धिक्कार है। उस दूसरे पुरुष को धिक्कार है और काम को धिक्कार है।

संतो के स्वभाव का भी वर्णन भर्तृहरि ने नीतिशतक में किया है-

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्यर्वतीकृत्य नित्यं

निज हृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

अर्थात् जो मन, वचन और शरीर में पुण्यरूप अमृत से भरे रहते हैं, त्रिभुवन को उपकारों से तृप्त कर देते हैं और दूसरे के अल्पमात्र भूल को भी बढ़ाकर पहाड़ कर देते हैं, ऐसे हृदय में प्रसन्न रहने वाले संत विरले ही हैं।

भर्तृहरि, वैरागियों को किस प्रकार से वैराग्य का अनुशरण करना चाहिये, स्पष्ट करते हुए वैराग्यशतक में लिखा है कि-

मोहं मार्जयतामुपार्जय रतिं चन्द्रार्धचूडामणौ
चेतः स्वर्गतरं गिणीतत भुवामासंगमंगी कुरु।
को वा वीचिषु बुद्धेषु च तडितल्लेखासु च स्त्रीषु च
ज्वालाग्रेषु च पन्नगेषु च सरिद्वेगेषु च प्रत्ययः।⁴

अर्थात् -हे चित् ! मोह को छोड़ दो। जिनके मस्तक पर अर्द्धचन्द्रशोभित हैं, उस भगवान शिव से प्रेम करो। गंगा तट के वृक्षों के नीचे विश्राम करो। तरंगे, पानी के बुलबुले, बिजली की चमक, अग्नि की शिखा, सर्प और नदी की प्रवाह की तरह स्त्री भी क्षणस्थायी है। इन सभी वस्तुओं में आसक्त न होकर वैराग्य के पथ पर योगी होकर रहना चाहिये। उन्होंने यह भी लिखा है कि शरीर को स्वस्थ रहते अपने कल्याण का मार्ग आत्मार्पित कर लेना चाहिये।

यावत्स्वस्थमिदं कलेवरगृहं यावच्च दूरे जरा
यावच्चेन्द्रियशिक्षतरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषां कार्यः प्रयत्नो महान्

प्रोदीप्ते भवने च कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः॥⁵

योगियों को किन चीजों का त्याग करना चाहिये इसका वर्णन भर्तृहरि ने करते हुए लिखा है-

आशानाम नदी मनोरथजला तृष्णातरंगाकुला

रागग्राहवती वितर्कविहगा धैर्यद्रुमध्वंसिनी।

सोहावर्तसुदुस्तराऽतिगहना प्रोत्तुंगचिन्तावटी

तस्याः पारगता विशुद्धमनसो नन्दन्ति योगीश्वराः॥⁶

भर्तृहरि अपने आप को धिक्कारते हुए लिखते हैं कि-

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता-

स्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।

कालो न यातो वयमेव याता-

स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।⁷

भर्तृहरि ने कहा कि भोग, आयु, यौवन चंचल हैं। इसका विचार करते हुए यथाशीघ्र धैर्यसमाधियुक्त योगसाधना में लग जाना चाहिये-

भोगा मेघवितानमध्यविलसत्सौदामिनीचंचला

आयुर्वायुविघट्टिताम्रपटलीनीलाम्बुवद अगुरम् ।

लीला यौवनलालसा तनु भृतामिथ्याकलप्य द्रुतं

योगे धैर्यसमाधि सिद्धिसुलभे बुद्धिः विदद्धः बुधाः॥⁸

भर्तृहरि ने परमार्थनीय वैराग्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि-

भक्तिर्भवे मरणजन्मभयं हृदिस्थं

स्नेहो न बन्धुषु न मन्मथजा विकाराः॥

संसर्गदोषरहिता विजना वनान्ता

वैराग्यमस्ति किमतः परमार्थनीयम्॥⁹

भगवान् शिव की भक्ति हो, हृदय में जन्म-मरण का भय न हो, बन्धुओं के प्रति असत् सम्बन्ध-स्नेह न हो, मन काम विकार से रहित हो, जीवन असंगत हो और एकान्त वन में निवास हो, मन में समस्त विनश्वर और असत् वस्तुओं तथा सम्बन्धों के प्रति अनाशक्ति का भाव हो, तो इससे बढ़कर परमार्थ स्वरूप वैराग्य दूसरा हो ही क्या सकता है।

नाथसिद्धों की वानियां में भी भर्तृहरि ने अपने जीवन की छाप डाला है-योगी की परिभाषा करते हुए भर्तृहरि लिखते हैं कि-

मन निरास सकल रसभोगी।

कहै भरथरी ते नर जोगी॥

भर्तृहरि योगसाधनविधि पर 'सप्तसंघ' में लिखा है कि-

आदि संख का मूलंकार। अनली बाई ऊंकार।

पहला संख निरंजन देव। पाया ब्रह्मज्ञान का भेव॥

उलटि उजाई गगन कं चढ़ै। अनभै रहतां पिंडन पडै॥

दूजा संख निरालंभ कथ्या। न जानं घरि सूरिज क्या रहे॥
 तीजा संख विचारह पाया। षेचरी मुद्रा त्यागंत माया॥
 माया त्यागौ राषौ काल। इन उपदेसैं वंचिये जमकाल॥
 थौथासष संतोष भणीजै। द्वादस अंगुल पवना पीजै॥
 पीजै पवना बाजै बंस। लौ न पड़ै काया न उड़ै हंस॥
 पंचमा संषबाँधि लै बाई। षटचक्र बैँधटी आई॥
 पाया कंवल सहस्र दल सुष। वो जनम-जनम का गया दुष॥
 छठा संष अकुलीन भणीजै। गुरु प्रसादँ सिव सिव कीजै॥
 सिव सिव करि निरारंभ रहीजै। इन उपदेसैं जुगि जुगि जीजै॥
 सातमां संष कद्रप होई। निद्रा तजी कालकौं जोई॥
 काल तजी सिवसकती समि रहै। सो जोगी पंच भू आतमां गहै॥
 सपत संष का जाणै भैव। सोई होई निरंजन देव॥
 सपत संष भणत भरथरी जोगी। थिर होई कंधा काया होई निरोगी॥¹⁰

इस तरह से भर्तृहरि ने अपने ग्रन्थों में अपने सम्पूर्ण जीवन की छाप छोड़ी है तथा लोक को सन्देश दिया है।

संदर्भ

1. नीतिशतकम् भर्तृहरि श्लोक -26।
2. वही -- श्लोक दो।
3. नीतिशतकम् श्लोक 79।
4. वैराग्यशतकम् श्लोक 8।
5. वैराग्यशतकम् श्लोक 85।
6. वैराग्यशतकम् श्लोक -43।
7. वैराग्यशतकम् श्लोक 12।
8. वैराग्यशतकम् - श्लोक 52।
9. वैराग्यशतकम् श्लोक 72।
10. नाथ सिद्धों की बानिया । 589 से 596